अक्षरबन

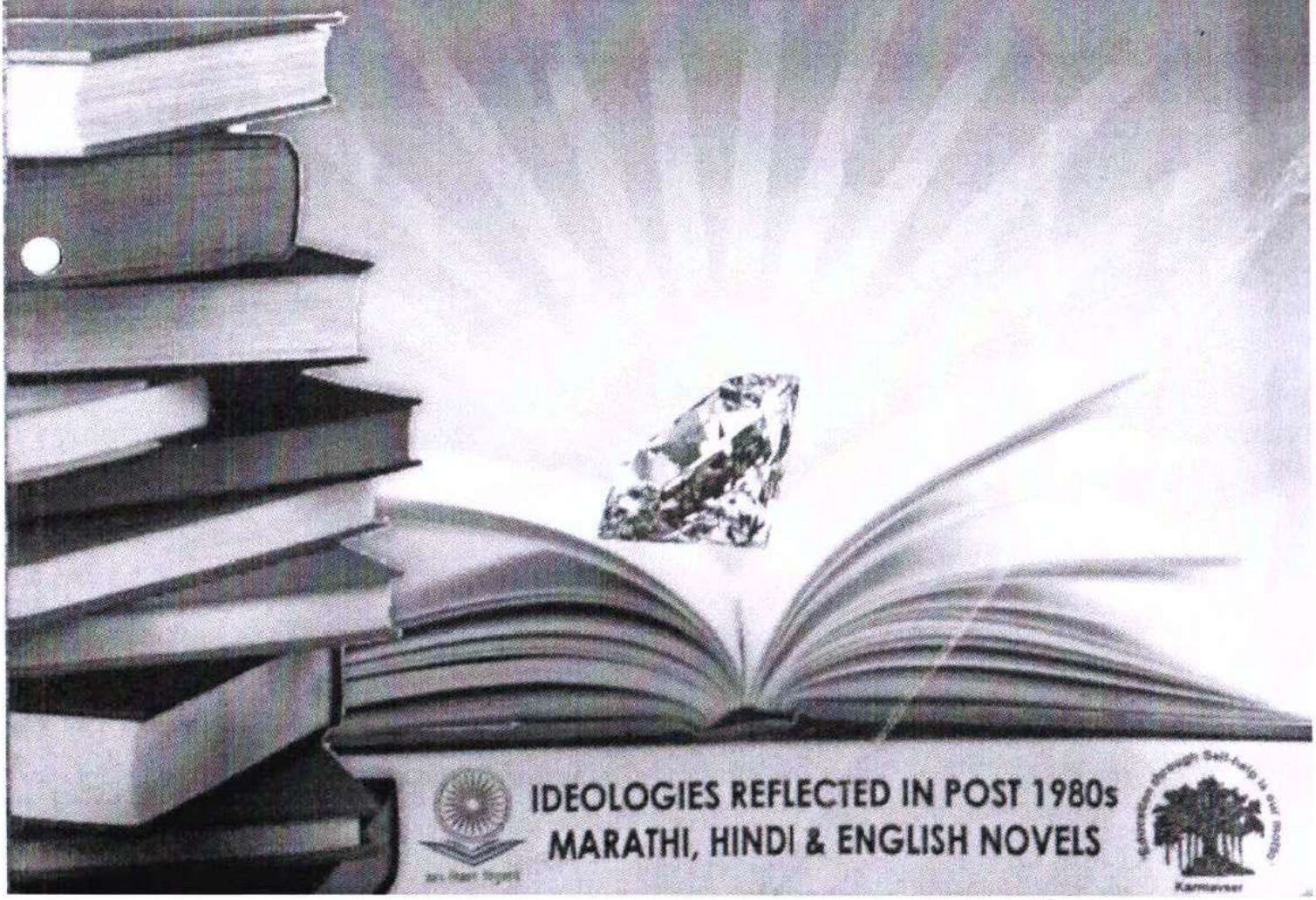

IDEOLOGIES REFLECTED IN POST 1980s
MARATHI, HINDI & ENGLISH NOVELS

Scanned by CamScanner

ISBN : 978 – 93 – 86077 – 19 – 6

अक्षरबन

IDEOLOGIES REFLECTED IN POST 1980s MARATHI, HINDI & ENGLISH NOVELS

प्रायोजक : विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली

आयोजक : रयत शिक्षा संस्था संचलित,
चंद्राबाई–शांताप्पा शेंडुरे, कॉलेज, हुपरी

© प्र. प्रधानाचार्य
चंद्राबाई–शांताप्पा शेंडुरे, कॉलेज, हुपरी, जि. कोल्हापुर.

प्रकाशक : ए.बी.एस.पब्लिकेशन, वाराणसी – 221007
Mob : 09450540654
E-mail : abspublication@gmail.com

संस्करण : प्रथम, फरवरी 2017

पृष्ठसज्जा : प्रा. बाळकृष्ण जाधव, सचिन भोसले

शब्दसज्जा : अमृता जगताप

मुद्रक : श्रीअत्री, राजारामपुरी 8 वी गल्ली, कोल्हापुर.

Scanned by CamScanner

अनुक्रम

अनुक्रम	लेखक	आलेख विषय	पृष्ठ क्र.
1.	भारतीय मनीषियों का शैक्षिक चिंतन	डॉ. सुनील कुमार, डॉ. लवलीन कौर	1
2.	जयश्री राय के उपन्यास 'औरत जो नदी है' मे नारी वैषम्य और अपेक्षाएँ	डॉ पवन कुमार शर्मा	6
3.	डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर विचारधारा और हिंदी कथा साहित्य : विशेष संदर्भ मे उपन्यास उधर के लोग	डॉ. भुपेंद्र सर्जेराव निकाळजे	11
4.	आधुनिक उपन्यास मे चित्रित यथार्थवाद: उषा प्रियवंदा के 'रूकोगी नही राधिका' उपन्यास के विशेष संदर्भ में'	प्रा. मारूफ मुजावर	14
5.	मृदुला गर्ग के उपन्यासों में चित्रित गांधीवाद	डॉ. भारत श्रीमंत खिलारे	18
6.	अलका सरावगी के 'शेष कादंबरी' में मानवतावाद	श्रीमती नेहा अनिल देसाई	23
7.	"भूमंडलीकरण से प्रभावित हिंदी उपन्यास में समस्या का अध्ययन"	डॉ. संजय चोपडे	26
8.	भूमडलीकरण और नारीवाद	प्रा.डॉ.सौ.सुगंधा हिंदूराव घरपणकर	29
9.	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य मे 'कितने पाकिस्तान' की प्रासंगिकता	डॉ. नारायण विष्णु केसरकर	31
10.	हिन्दी उपन्यास में नारीवाद	डॉ. सुनील कुमार	34
11.	भूमंडलीकरण के परिप्रेक्ष्य में "रास्तों पर भटकते हुए" उपन्यास का अनुशीलन	श्री. सुशील अशोक हुपरीकर	39
12.	भूमडलीकरण मे बदलते मूल्य	प्रा.सौ.एस.के.पाटील	45
13.	डॉ. शशिप्रभा शास्त्री के उपन्यासो में नारीवाद	संतोष बबनराव माने	50
14.	1980 के बाद के हिंदी के उपन्यासों में नारीवाद	डॉ.शैलजा रमेश पाटील,	52
15.	"राहुल सांकृत्यायन के उपन्यासों में चित्रित मार्क्सवादी नायिकाएँ"	लेफ्टनंट डॉ.रविंद्र पाटील	54
16.	हिंदी उपन्यासों में प्रवाहीत अम्बेडकरवाद	डॉ. उत्तम राजाराम आळतेकर	57
17.	मानवतावाद के परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य	डॉ. दीपक रामा तुपे	60
18.	मानवतावाद के परिप्रेक्ष्य मे रत्नकुमार सांभरिया का लघुकथा साहित्य	प्रा. शहाजी जाधव	65
19.	अंबेडकरवाद के परिप्रेक्ष्य मे हिंदी उपन्यास	डॉ. गोरखनाथ किर्दत	68
20.	सफिया अख्तर की मक्तुब निगारी	डॉ. सवीहा एस.सय्यद	70
21.	झीनी झीनी बीनी चदरिया उपन्यास में मार्क्सवाद	सुश्री. श्रीदेवी बबन वाघमारे	74

Scanned by CamScanner

अंबेडकरवाद के परिप्रेक्ष्य में हिंदी उपन्यास

डॉ. गोरखनाथ किर्दत
यशवंतराव चव्हाण कला व वाणिज्य
महाविद्यालय, इस्लामपूर

भारतीय भाषाओं में 'अंबेडकरवाद' की अवधारणा बुद्ध और बाबा साहब के विचार और जीवन दर्शन से प्रेरित होकर बनी है। मराठी तथा हिंदी में 'अंबेडकरवादी' विचारधारा बाबा साहेब के संघर्ष की उपज है। दलित साहित्य, ब्राह्मणवाद के विरुद्ध दलित लेखकों की स्वानुभूतिपरक अभिव्यक्ति का परिणाम है। दलन और उत्पीड़न की कोख से ही दलित साहित्य का जन्म हुआ है। हिंदी दलित साहित्य की शुरुआत कविता से होती है। इसके बीज कबीर के काव्य में मिलते हैं। उत्तर भारत में स्वामी अछूतानंद जी ने इस परंपरा को आगे बढाया और बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में ओमप्रकाश वाल्मीकि, कँवल भारती, डॉ एस. पी. सुमनाक्षर, डॉ एन. सिंह, डॉ. ममता प्रसाद जी, मोहनदास नैमिशराय, डॉ. जयप्रकाश कर्दम, डॉ. धर्मवीर, प्रो. शैयौराज सिंह 'बेचैन', सूरजपाल चौहान, मलखान सिंह, बुद्धशरण हंस, रत्नकुमार सांभरिया, डॉ. कालीचरण 'स्नेही', डॉ. दयानंद बटोही आदि हिंदी दलित साहित्य के जुझारू लेखकों ने आजादी के बाद बदले हुए माहौल में दलित, आदिवासी और पिछडे हुए समाज को साहित्य के केंद्र में लाया है।

विश्वरत्न बाबा साहब डॉ. भीमराव आंबेडकर जी की प्रेरणा से साहित्य में मूकमानवतावाद को जुबान मिल रही है। संवैधानिक सुरक्षा के कारण इस देश में दलित आदिवासी और स्त्रियां मानवीय गरिमा के साथ स्वाभिमानपूर्वक जीवन जीने का हक पाने में सफल हो रहे हैं। आज समस्त भारतीय भाषाओं में बहुत बडे पैमाने पर दलित लेखक अपने समाज को गुलामी से मुक्त करने, अन्याय-अत्याचार तथा गैर बराबरी के विरूद्ध सचेत करने का कार्य कर रहे हैं।

आजादी के बाद बदले हुए माहौल में हाशिए पर पड़े लोग डॉ. भीमराव आंबेडकर की प्रेरणा और पहल से सामाजिक गुलामी से मुक्त होने के लिए छटपटाने लगे हैं। बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में डॉ. आंबेडकर के चिंतन और साहित्य से ऊर्जा ग्रहण कर आंबेडकरवादी साहित्य की शुरुआत हुई। डॉ. जयप्रकाश कर्दम का 'छप्पर' उपन्यास इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। प्रस्तुत उपन्यास दलित मुक्ति और मनुष्यत्व की प्रतिष्ठा करता है। डॉ. आंबेडकर जी ने दलित समाज के पिछडेपन का प्रमुख कारण उनकी अशिक्षा बताया है। उपन्यास का नायक 'चंदन' मातापुर गाँव का दलित युवक है जो ऊँची शिक्षा पाने के लिए शहर जाता है और अनेक विडंबनाओं को झेलते हुए एम. ए. तक की पढाई करता है और पीएच.डी. के लिए पंजीकरण करता है। चंदन पढ़-लिखकर नौकरी की अपेक्षा नहीं रखता। समाज बदलना चाहता है। वह कहता है कि "हमे समाज से टक्कर लेनी है, सत्ता से लड़ाई लड़नी है, जुल्म और शोषण के विरूद्ध संघर्ष करना है। एक-दो आदमियों के बस का नहीं काम। बल्कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समाज के हित और उत्थान के लिए आगे आना पडेगा, तभी लोगों के कष्ट और दुःख दूर होंगे, शोषण से मुक्ति मिलेगी तथा सुख और सम्मान से जीने के अवसर मिलेंगे।"[1] चंदन अपनी शिक्षा का उपयोग अपने दीन-हीन समाज के उत्थान के लिए करना चाहता है। पीढी-दर-पीढी ठाकुर जमिंदारों का कर्ज चुकाने के लिए बंधुआ बनकर विवशता में जीनेवाले अपने समाज को वह शिक्षित बनाना चाहता है ताकि उनमें जागृति पैदा हो जाए और वे अपने शोषण की जंजीर को तोड फेंकने के लिए उठ खडे हो सके। उपन्यास के अन्य पात्रों में रजनी, हरिया, कमला तथा चंदन के पिता, सुक्खा सभी प्रगतिवादी सोच को लेकर चलते हैं।

दलितों के मुक्तिपर्व का प्रारंभ शाहू जी महाराज ने किया था। उनमें नवचेतना और उमंग भर देने का काम महात्मा फुले तथा डॉ. आंबेडकर जी ने की। इसी कार्य में जीन साहित्यिकों ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया उनमें मोहनदास नैमिशराय का नाम अग्रगण्य है। उनका उपन्यास 'मुक्तिपर्व' शिक्षा के क्षेत्र में अध्यापकों द्वारा किया जानेवाला जातिगत भेद-भाव स्पष्ट करता है। उपन्यास का प्रमुख पात्र सुनीत जन्म से ही जातिगत विषमता का अनुभव करता है। चमारों की बस्ती में सवर्ण अध्यापक अध्यापन करने के लिए नहीं आते थे। सुनीत जब बनिया पाड़ा बस्ती के ज्युनियर हाईस्कूल में एडमिशन लेने के लिए जाता है तब उससे पूछा जाता है कौन से स्कूल से आए हो ? और जब वह बताता है कि 'निकेतन प्राइमरी स्कूल से' तो अध्यापक कहते हैं "समझ गया बच्चू समझ गया चमारों के स्कूल से आए हो यही ना।" लेकिन हद तो तब होती है जब एक दिन सुनीत के पिता बंसी के हाथो को नवाब

Scanned by CamScanner

साहब थूँकने का उगलदान बनाते है। बंसी इस अपमानजनक व्यवहार को तो सहता है किंतु उसकी चेतना तब जागृत होती है जब नवाब साहब गुलामी का अहसास दिलाते वक्त कहते है "तुम गुलाम थे, गुलाम हो, गुलाम रहोगे।"[2] इस पर बंसी करारा जवाब देते हुए कहता है – "जनाब अली हम न गुलाम थे, न गुलाम हैं, न गुलाम रहेंगे।"[3] ऐसे घिनौने अपमान से मुक्ति पाने के लिए वह वहाँ से निकल पड़ता है।

यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र' का उपन्यास 'हजार घोड़ो का सवार' भी शोषित एवं दलित वर्गों की उपेक्षा एवं व्यथा का चित्रन करता है। उपन्यास का नायक 'गीधू' उर्फ गिरिधार बचपन से ही विद्रोही एवं मानवतावाद का पक्षधर है। प्रस्तुत उपन्यास मे लेखक ने राजनीतिक व्यवस्था, दलित अत्याचार, स्त्री का घृणित शोषण तथा स्वार्थी प्रवृत्तियो पर प्रकाश डाला है। गीधू सेठ महता की मदद से अछूतों मे शिक्षा प्रसार का कार्य करता है। गिरिराज किशोर कृत 'परिशिष्ट' में बावनराम और सुवरन चौधरी अपने बच्चे अनुकूल और रामउजागर को इंजिनिअरिंग पढने के लिए आई.आई.टी में भेज देते हैं। उनका यह प्रयास दलितो मे शिक्षा के प्रति जागृतता दर्शाता है। 'चक्रव्यूह' मे श्रवणकुमार गोस्वामी जी ने डॉ. शैलेश, डॉ. सोनूराम तथा डॉ. दीनानाथ आदि उच्च शिक्षित पात्रों के माध्यम से डॉ. आंबेडकर के 'उच्च शिक्षित बनों' वाले नारे को बुलंद किया है। रामदरश मिश्र के 'जल टूटता हुआ' उपन्यास में गाँव मे खुलने वाले स्कूल के लिए सभी दलित सहायता करते है। जग्गू हरिजन भटपार के हाईस्कूल के कार्यकारणी के सदस्य थे। स्कूल की सभा में वे कहते हैं – "स्कूल सबका है, हम हम हरिजन लोग अगर पैसा नही दे सकते तो मिहनत तो दे सकते हैं न।"[4] स्पष्ट है कि दलित समाज में सामाजिक भावना एवं एकता की भावना बढाने का कार्य उपन्यासो के माध्यम से किया जा रहा है।

आंबेडकर के विचारों से प्रेरित साहित्य का केंद्र मनुष्य है। मनुष्य की गुलामी को तोडना, धर्म की आड मे उसकी छीनी हुई प्रतिष्ठा को प्राप्त करना, इसलिए परंपरा को नकारना आंबेडकरवादी साहित्य का मूल उद्देश्य है। साथ ही, मनुष्य की चेतना को जागृत करना और उसे उद्दीप्त करना और सत्य की ओर उन्मुख करना ही इस साहित्य का प्रयोजन है। प्रस्तुत साहित्य प्रवाह सामाजिक परिवर्तन की आकांक्षा से निर्मित 'अस्मिता मूलक' साहित्य है। स्पष्ट है कि आंबेडकरवादी साहित्य सही अर्थों में दलित मुक्ति, रूढियों से ग्रस्त व्यक्ति की मुक्ति का मार्ग दिखाने वाल तथा समता, ममता और बुद्ध की करूणा–मैत्री की भावना को मजबूती प्रदान करने वाला, सामाजिक बदलव का आंदोलनपरक साहित्य है। बाबा साहब जिस तरह से भातीय संविधान के मुख्य शिल्पी है, ठीक उसी भाँति दलित विमर्श, स्त्री विमर्श आदि के मुख्य प्रेरणास्त्रोत भी है।

संदर्भ :

1. जयप्रकाश कर्दम – छप्पर, पृ. 60
2. मोहनदास नैमिशराय – मुक्तिपर्व, पृ. 28
3. वही – पृ. 28
4. रामदरश मिश्र – जल टूटता हुआ, पृ. 69

Scanned by CamScanner